

Otto Böhtlingk & Rudolph Roth: Sanskrit-Wörterbuch, Part 1, Petersburg 1855

श्राविद् (von विद्, वेत्ति mit श्रा) f. 1) *Forwissen, Bekanntsein*: तयो-
राविदीति तयोऽनुमन्यमानयोरित्येवैतदाह् ÇAT. BR. 1, 9, 4, 8. 10, 3, 5, 16.
रुष्वैव लेखिषाविद् गच्छति TS. 5, 1, 9, 6. — 2) technische Bezeichnung
der mit श्राविस् und श्रावित beg. Formeln in VS. 10, 9. ÇAT. BR. 5, 2, 5, 31.

श्राविद्दृष्य (von श्राविद्) n. Nähe P. 7, 2, 25. 8, 3, 68.

श्राविद्द (von व्यद् with श्रा) adj. 1) partic. s. u. व्यद्. — 2) *krumm* AK.
3, 2, 21. TRIK. 3, 3, 214. H. 1436. a. n. 3, 342. MED. dh. 28. — 3) *falsch, be-
trügerisch* HÄR. 201. — 4) *thöricht* ÇABDAR. im ÇKDR.

श्राविद्दस् (von विद्, वेत्ति mit श्रा) adj. *kundig* RV. 4, 19, 10.

श्राविध (von व्यद् with श्रा) m. P. 3, 3, 58, Vārt. 4. *eine Art Bohrer*
AK. 3, 3, 36.

श्राविर्भाव (von भू mit श्राविस्) m. *Offenbarwerdung, Offenkundigkeit*
VJUP. 111. ÇAT. BR. 10, 3, 5, 16. KĀND. UP. 7, 26, 1. SĪH. D. 23, 10.

श्राविल adj. f. श्रा *trübe*, von Flüssigkeiten AK. 1, 2, 3, 14. H. 1071.
SUGR. 1, 262, 1. RAGH. 13, 36. गिरिनदी मदप्रन्नवणाविलाम् N. 13, 6. अन्त-
र्विन्निभित्तलाविल (Meer) MBH. 1, 1216. वाप्यफेनत्तलाविल R. 2, 59, 29.
von Augen SUGR. 1, 121, 1. 236, 1. 2, 304, 6. साम्नाविलेत्तण MBH. 14, 1963.
R. 2, 37, 10. 1, 17, 24. 4, 19, 10. RAGH. 18, 28. *trübe, glanzlos*: चन्द्ररेखामि-
वाविलाम् R. 5, 18, 3. ब्रिधदाविला मृगलेखामुपसीव चन्द्रमा: RAGH. 8, 42.
auf moralische Zustände übertr.: मदाविल: (मोक्ष): ÇĀNTIG. 3, 2. लदी वै-
श्रित्तिरेनाविलै: KUMĀRAS. 5, 37. — Vgl. अनाविल, पर्याविल.

श्राविलकन्द (श्रा + कन्) m. N. einer Wurzel RĀGAN. im ÇKDR.

श्राविलय (von श्राविल), श्राविलयति *trüben, beflecken*: व्यपदेशमावि-
लयितुं किमोक्तम् — कूलकषेव सिन्धु: प्रसन्नमन्भ: ÇĀK. 117.

श्राविष्करण (von करू mit श्राविस्) n. *das Bekanntmachen, an-den-
Tag-Legen* VJUP. 76. स्वमतस्य P. 8, 2, 94, Sch. स्वाभिप्रायावि 1, 3, 23,
Sch. परदोषावि 0 SĪBH. K. zu 1, 2, 15.

श्राविष्कार (wie eben) n. dass. SĪH. D. 13, 20.

श्राविष्ट s. u. विप्र mit श्रा.

श्राविष्टलिङ्ग (श्रा + लि) adj. *worin alle drei Geschlechter eingehen*;
von subst., welche sowohl in einem attribut. als auch in einem prädic.
Verhältniss ihr ursprüngliches genus beibehalten; z. B. प्रधान n., अर्थ
m., उपसर्ग n. Sch. zu H. 720. 1434. 1438. 1441.

श्राविष्ट (von श्राविस्) ved. adj. P. 4, 2, 104, Vārt. 8. *offenkundig*: न वो
गुह्यं चकम् भूरे इष्कृतं नाविष्टं वसवो देवकेळनम् RV. 10, 100, 7. श्रावि-
ष्टो वर्धति चारु: 1, 93, 5 (vgl. P. 4, 2, 104, Vārt. 8, Sch. KĀÇ. zu 8, 3, 101).

श्राविस् (aus श्राविद्) adv. *offenbar, vor Augen* (Gegens. गुह्यं und ति-
रस्) Nir. 18, 15. gaṇa स्वरदि zu P. 1, 1, 37. AK. 3, 3, 12. H. 1339. या-
न्याविर्था च गुह्यं वसूनि RV. 10, 34, 5. प्रेणा तदेयो निकृते गुह्यवि: 71, 1.
AV. 7, 108, 1. 10, 8, 6. VS. 10, 9. MUND. UP. 2, 2, 1. Uebergang von स in
ष P. 8, 3, 41, Sch. श्राविष्यति ebend. Besonders gebräuchlich (vgl. gaṇa
उर्धादि zu P. 1, 4, 61) in den Verbindungen: a) mit भू und अस् *offenbar
werden, — sein, erscheinen, vor Augen sein*: श्राविरेभ्यो ऽभवत्सूर्य: RV.
1, 146, 4. 31, 3. 9, 79, 5. 10, 107, 1. AV. 12, 1, 60. तस्मै वा श्राविरसामेति ÇAT.
BR. 11, 3, 1, 5. 1, 6, 17. स स्वाय इयायाविर्भविष्यति 6, 3, 1, 22. तदिदं मन:
सृष्टमाविर्भूयत् । निरुक्ततरं मूर्ततरम् 10, 3, 3, 3. तमस्तपति धर्मशिो कथ-
माविर्भविष्यति ÇĀK. 111. श्राविर्भूय — मृगाणां यूयम् RAGH. 9, 55. श्रा-
वार्थके विनायि मान्मयमाविरासीत् SĪH. D. 54, 10. von Gottheiten: श्राविर्भू

मया (Çiva spricht) चिन्ता KĀTĪS. 1, 29. सरस्वती — श्राविरासीत् PRAB.
86, 4. देवानो कार्यसिद्ध्यर्थमाविर्भवति सा (देवी) यदा DEV. 1, 48. श्राविर्भूत
Hir. 63, 12. Vikr. 8. Megh. 21. — b) mit करू *offenbar machen, aufdecken,
sehen lassen, zeigen*: श्राविर्भूतं कृणुते विभाती RV. 1, 123, 10. श्रावि:
स्व: कृणुते गूह्ये वृत्तम् 10, 27, 24. श्राविर्भूताङ्कणुते व्यर्थैः श्रु 5, 83, 3.
1, 86, 9. 116, 12. 123, 6. 124, 4. 5, 2, 9. AV. 4, 20, 5. 6, 123, 2. 12, 4, 29, 30.
नेदाविरुधं कर्वाणीति ÇAT. BR. 13, 8, 1, 10. 3, 9, 3, 23. 4, 2, 1, 18. 2, 12.
कामान्, इयायाविष्कुरुते Nir. 4, 16. अत्र उपदिशति इत्यनेन श्राविष्कुरा-
ति इति लक्ष्यते SĪH. D. 13, 20. सरनखततमपिडतमाविष्कुरुते भुगामूलम्
60, 17. श्राविष्कृतं *aufgedeckt, an den Tag gelegt, sichtbar geworden, zur
Erscheinung gebracht, bekannt* H. 1478. श्राविष्कृतैः नमः, अनाविष्कृतपा-
यान् M. 11, 226. (याति) श्राविष्कृतारुणपुरःसर एकोऽर्कः ÇĀK. 77. 80.
26, 17. RAGH. 10, 53. अनाविष्कृत KUMĀRAS. 7, 35. अस्या नूनं विद्यालाद्याः
सदेवामुरमानुषम् । लोकं निर्मथ्य धात्रेदं रूपमाविष्कृतं (viell. adv. *offenbar*)
कृतम् ॥ MBH. 1, 6547. — श्राविस्तराम् compar. ÇAT. BR. 10, 5, 3, 10: श्रा-
विस्तरां वा अग्निः कर्मणः.

1. श्रावी s. u. श्राव्य.

2. श्रावी (von वी mit श्रा) f. pl. *Geburtswehen* SUGR. 1, 279, 4.

श्रावीत s. व्या mit श्रा.

श्रावीतिन् (von श्रावीत) m. *ein Brahman, der die heilige Schnur über
die rechte Schulter trägt*: उद्धते दन्तिणे पाणावुपवीत्युच्यते द्विजः । सद्ये
प्राचीन (loc.) श्रावीती निवीती काष्ठसज्जने M. 2, 63. Nach KULL. soll प्रा-
चीनश्रावीती e in Wort und die Zusammenziehung der Vocale aus Rück-
sicht für das Metrum unterlassen sein. — Vgl. प्राचीनावीतिन्.

श्रावृक m. *Vater* (im Drama) AK. 1, 1, 3, 12. H. 332.

श्रावृत् (von वर्त् with श्रा) f. 1) *das Sichherwenden, Umwenden; Ein-
kehr*: इन्द्रं नित्या गिरा मनाच्छङ्गु रिपिता इतः । श्रावृते सोमयीतये । RV. 3,
42, 3. नास्यो (धुरः) वासि विमुचं नावृतेन 5, 46, 1. 2, 36, 6. — 2) *Wendung
des Ganges, Weges; Lauf, Gang, Richtung*: सूर्यस्यावृत्तं मन्वावृत्ते दन्ति-
णामन्वावृत्तम् AV. 10, 5, 37. VS. 2, 26. शतं ते सत्त्वावृत्तः 12, 8. AV. 6, 77, 3.
यत्र प्रेम्तीरभिपत्यावृत्तः 10, 7, 4. श्रादित्यस्यावृत्तं TS. 5, 2, 1, 3. ÇAT. BR.
4, 6, 2, 21. — 3) *Wendung einer Handlung; Vorgang, Folge von Ver-
richtungen*: तस्यैषैव समान्यावृत्त्यद्वयद्विष्येभ्यः ÇAT. BR. 4, 6, 8, 20. 2, 3,
1, 18. 3, 5. यो वा वृतेयामावृत्तं च ब्राह्मणं च न विद्यात् 6, 2, 1, 39. पुरुषत्र-
पकामिव कृत्वा तस्मिस्तामावृत्तं कुरु: *damit soll man dasselbe vornehmen,
was mit einem wirklichen Menschenleibe* At. Br. 7, 2, 34. अमत्तिका तु
कार्यं स्त्रीणामावृत्तेषुतः । संस्कारार्थं शरीरस्य यथाकालं यथाक्रमम् ॥ M.
2, 66. In der Sprache des Rituals: *die Handlung im Gegensatz zu dem dabei
gesprochenen Worte* KĀTĪ. ÇR. 2, 2, 4. श्रावृत्कृणां मन्त्रनिवृत्त्यर्थम् Sch. zu 16,
7, 6. 26, 6, 20. ĀÇV. ÇR. 3, 11, 6, 13. instr. श्रावृता *in der gewohnten Weise*
ÇAT. BR. 14, 9, 4, 18 (= BRH. ĀR. UP. 6, 4, 19). BRH. ĀR. UP. 6, 3, 1. श्रावृतेव
पर्यायं कृत्वा, श्रावृतेव हृदयप्रलेन चरति ĀÇV. GRH. 1, 11. श्रावृताः श्रावृता
nach der Weise eines Mannes, der das heilige Feuer unterhält, JĀG. 3, 2. अ-
न्यैवावृता कार्यं पिपटनिर्वपणं सुते: M. 3, 248. श्रावृत्परिक्रमन् *einen Um-
gang in der gewohnten Weise* 214 (v. l. श्रावृत् विक्रमन्). — 4) *Reihen-
folge, Ordnung* AK. 2, 7, 36. H. 1304. त्रेधा विभज्य देवतो बुक्कति श्रावृतो
वै देवाद्यावृत् इमे लोकाः ÇAT. BR. 13, 1, 2, 2. श्रावृत्तं श्रावृतिः 12, 2, 2, 12.
— Vgl. अनावृत्, दन्तिणावृत्, प्रदन्तिणावृत्.